आईपीएल का 13वां सीजन

आईपीएल के प्रायोजकों में कुछ चीनी कंपनियां भी हैं। गलवान घाटी में 20 भारतीय सैनिकों की शहादत के बाद खुद बीसीसीआई ने घोषणा की थी कि आईपीएल में चीनी कंपनियों की स्पॉन्सरशिप की समीक्षा की जाएगी।

अमर राणा।

कोरोना के इस कठिन दौर में यह खबर हौसला बढ़ाने वाली है कि आईपीएल का 13वां सीजन आगामी 19 सितंबर से शुरू होने जा रहा है। क्रिकेटर ही नहीं, इस महत्वपूर्ण आयोजन से जुड़ा हर तबका और दुनिया भर में फैले करोड़ों क्रिकेट प्रेमी पिछले चार महीने से इस घोषणा का इंतजार कर रहे थे। हालांकि महामारी की मौजूदा स्थिति को देखते हुए इसका आयोजन इस बार भारत के बजाय संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में कराने का फैसला हुआ है।

देश के बाहर आईपीएल के आयोजन का यह तीसरा मौका है और ज्यादातर क्रिकेट प्रेमियों को इससे कोई समस्या नहीं होती। आयोजन को भारत सरकार की हरी झंडी मिलना अभी बाकी है, हालांकि फैसला आईपीएल और बीसीसीआई के स्तर पर सभी स्टेकहोल्डर्स से विचार–विमर्श के बाद हुआ है, लिहाजा लगता नहीं कि इसमें अब कोई बड़ी बाधा आएगी। हां, कुछ छोटी–छोटी बाधाएं जरूर बची हुई हैं, मसलन प्रायोजक कंपनियों का मामला।

आईपीएल के प्रायोजकों में कुछ चीनी कंपनियां भी हैं। गलवान घाटी में 20 भारतीय सैनिकों की शहादत के बाद खुद बीसीसीआई ने घोषणा की थी कि आईपीएल में चीनी कंपनियों की स्पॉन्सरशिप की समीक्षा की जाएगी। कहा जा रहा है कि अगले हफ्ते आईपीएल गवर्निंग काउंसिल की बैठक में इस पर विचार किया जाएगा। वैसे आईपीएल के लिए नए स्पॉन्सर ढूंढना भी कोई मुश्किल काम नहीं है, लेकिन इसके टाइटल स्पॉन्सर वीवो के साथ पांच साल का कॉन्ट्रैक्ट है, 2199 करोड़ रुपये का। देखना होगा कि संबंधित पक्ष इस मामले को कैसे सुलझाते हैं।

एक सवाल यह भी है कि क्या मैच बिल्कुल खाली स्टेडियम में होंगे, या थोड़े–बहुत दर्शकों की गुंजाइश बन सकती है? इस बारे में आखिरी फैसला यूएई सरकार ही करेगी, लेकिन तमाम सावधानियों के साथ थोड़े–बहुत भी दर्शक स्टेडियम में रहे तो टूर्नामेंट की चमक बहुत बढ़ जाएगी। अभी तक की योजना के मुताबिक 19 सितंबर को उद्घाटन मैच से महीना भर पहले यानी 20 अगस्त तक सारी टीमें यूएई के लिए उड़ान भर लेंगी, तभी उन्हें प्रैक्टिस के लिए एक महीने का वक्त मिल पाएगा।

क्वारंटीन पीरियड को ध्यान में रखें तो इसके भी पंद्रह–बीस दिन पहले, यानी अगस्त की शुरुआत में ही देश–विदेश के सभी खिलाड़ियों को टीम फ्रैंचाइजी के पास रिपोर्ट करना होगा।

यानी वक्त अब बिल्कुल नहीं बचा है। बहरहाल, यह आयोजन भले ही क्रिकेट का हो, लेकिन इस बार के आईपीएल का रिश्ता सिर्फ क्रिकेट से नहीं है। पस्ती, अलगाव और अतिशय सावधानी के इस माहौल में आईपीएल से लोगों के मन के भीतर भी एक नई शुरुआत हो सकती है। महामारी का दायरा समेटने और उससे निपटने के उपाय जारी हैं लेकिन इसके समानांतर जिंदगी की हरकतें भी जोर पकड़ रही हैं।

आर्थिक गतिविधियों का एक पूरा चक्र आईपीएल से जुड़ा है, लिहाजा हम उम्मीद कर सकते हैं कि इसका यह सीजन केवल क्रिकेट की नहीं, पूरे देश के हौसले की नुमाइंदगी करेगा।

ध्यान का अभ्यास

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। किसी न किसी समय पर, इस दुनिया से प्रेम खो जाने पर हमें दुख का एहसास होता है। अक्सर, दुनियावी प्रेम के खो जाने पर हम प्रभु की ओर मुड़ते हैं। जब प्रभु हमारी पुकार सुनते हैं, वे हमें किसी ऐसे व्यक्ति के पास भेज देते हैं जो हमें दिखा सकता है कि हमारे भीतर शाश्वत प्रेम सदा विद्यमान रहता है। एक सद्गुरु हमें प्रभु के प्रेम से जोड़ देता है। युगों–युगों से सद्गुरु हमें शाश्वत प्रेम पाने का तरीका बताते आए हैं। सद्गुरु हमें ध्यान का अभ्यास करना सिखाते हैं। जब हम अध्यात्म पथ पर अग्रसर होते हैं, तो हम प्रभु के प्रेम का अनुभव करते हैं। प्रभु को बुद्धि के माध्यम से अनुभव नहीं किया जा सकता। प्रभु प्रेम है और हमारे भीतर बसती आत्मा भी प्रेम है। प्रभु का अनुभव करने के लिए हमें उन परतों को उतारना है जो हमें दिव्य प्रेम का अनुभव करने से दूर रखती हैं।

संपादकीय

शिविर काफी नहीं

आप प्रशिक्षण शिविर में तैयारी तो कर सकते हैं पर आपके प्रदर्शन में कितना सुधार आया है, इसका पता प्रतियोगिताओं में भाग लेकर ही लगता है। यही नहीं विभिन्न देशों में प्रतियोगिताओं में भाग लेने से यह भी पता चलता है कि आप किस माहौल में कैसा प्रदर्शन कर पाते हैं। इसके साथ ही कमियों का पता चलने पर कोच आपकी कमजोरी को दूर करने का प्रयास करते हैं। पर इस बार लगता है कि खिलाड़ियों को ऐसे मौके मिलेंगे भी तो बहुत कम। दिक्कत यह है कि इसका भी शिविर अब तक नहीं लग पाया है। हॉकी इंडिया ने 19 जुलाई से बेंगलुरू के साई सेंटर में शिविर लगाने की घोषणा की थी पर बेंगलुरु में कोरोना के मामलों में तेजी से इजाफा होने पर कर्नाटक सरकार ने फिर से लॉकडाउन लगा दिया, जो 22 जुलाई को ही खत्म हुआ है। इस वजह से शिविर लगने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। असल में मार्च में लॉकडाउन की घोषणा होने के बाद भारतीय हॉकी खिलाड़ी अपने कोच ग्राहम रीड के साथ इसी साई सेंटर में दो माह तक कमरे में बंद रहे थे और पिछले माह ही वे अपने घरों को गए हैं। हॉकी इंडिया वैसे भी आजकल कार्यवाहक अध्यक्ष के भरोसे चल रही है। इसलिए अब वह साई से मिलकर अगस्त माह से शिविर लगाने की योजना बना रही है।

भारत में कोरोना प्रभावितों की संख्या में तेजी से इजाफा होने की वजह से इस साल में भारत में किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के आयोजन की संभावना नजर नहीं आती है। ऐसे में खिलाड़ियों को तैयारी के लिए ऐसे मुल्कों में भेजना होगा, जहां कोरोना से हालात सुधर गए हैं। यही नहीं यह भी ध्यान रखना होगा कि उस देश में क्वारंटीन में समय बर्बाद न हो।

वजह है कोरोना वायरस के चलते खेल गतिविधियों का एकदम से थम जाना। हालांकि कुछ देशों में हालात सुधर जाने से वहां के खिलाड़ियों ने करीब एक माह पहले ही तैयारियां शुरू कर दी हैं।

अड़चनें कई तरह की

मनोज चतुर्वेदी

आम तौर पर किसी भी ओलिंपिक में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए पूरे चार साल तैयारी की जाती है। आखिरी एक साल बचने पर तो टीमें और खिलाड़ी अपना बेस्ट फॉर्म पाने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। टोक्यो में अगले साल 23 जुलाई से शुरू होने वाले ओलिंपिक खेलों के आयोजन में एक साल से भी कम समय बचा है और हमारे खिलाड़ी अभी पहले प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने की ही बाट जोह रहे हैं। वजह है कोरोना वायरस के चलते खेल गतिविधियों का एकदम से थम जाना। हालांकि कुछ देशों में हालात सुधर जाने से वहां के खिलाड़ियों ने करीब एक माह पहले ही तैयारियां शुरू कर दी हैं। भारत में कोरोना का प्रकोप कम होने के बजाय बढ़ ही रहा है। इस कारण हमारे खेल संगठन अभी शिविर लगाने की योजनाएं ही बना रहे हैं।

टोक्यो ओलिंपिक का आयोजन 2020 में ही होना था पर कोरोना के कारण इसे 2021 तक के लिए स्थगित कर दिया गया। देश में ज्यादातर विदेशी प्रशिक्षकों का करार भी अगस्त 2020 तक का ही था। स्वाभाविक रूप से सभी कोचों का करार अगले साल तक बढ़ा दिया गया। इस बीच दिल्ली हाईकोर्ट ने 57 राष्टधिय खेल फेडरेशनों

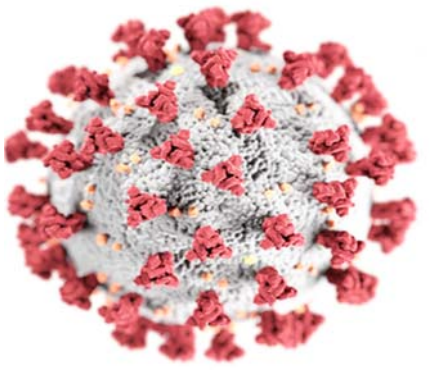

की मान्यता ही खत्म कर दी। इस स्थिति में खेल फेडरेशन तो राष्ट्रीय शिविरों का आयोजन कर नहीं सकते थे। सो भारतीय खेल प्राधिकरण ने यह जिम्मेदारी उठाने का फैसला किया। वह अब विभिन्न खेल फेडरेशनों से बात करके राष्ट्रीय खेल शिविरों के आयोजन की योजना बना रहा है। ज्यादातर शिविरों के अगले माह यानी अगस्त में शुरू होने की संभावना है।

इन शिविरों को लेकर एक और समस्या आ रही है। मार्च में लॉकडाउन की शुरुआत होने के बाद ज्यादातर विदेशी कोच अपने घर चले गए थे। अगर विदेशी कोच अगस्त माह में आ जाते हैं, तब भी सभी कोचों को काम करने का अवसर शायद ही मिले। इसकी वजह सरकारी गाइडलाइंस हैं। इनके हिसाब से 65 साल से ऊपर के कोच मौजूदा माहौल में स्टेडियम में जाकर प्रशिक्षण नहीं दे सकते। एथलेटिक्स में ओलिंपिक तैयारियों में आठ विदेशी कोच जुड़े हुए हैं। इनमें से तीन 65 साल या उससे ज्यादा के हैं। ये हैं जंप कोच ब्रेडोस ब्रेडोसियन (66), मध्यम दूरी की दौड़ों के कोच गेलीना बुखारीना (75) और शॉटपुट और डिस्कस कोच यूरी मीवाकोव (65)। इन कोचों की अनुपस्थिति में हमारे एथलीट आजकल सपोर्ट स्टाफ की देखरेख में अभ्यास कर रहे हैं। जेवेलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा को भारत के पदक दावेदारों में माना जा रहा है। उन्हें और उनके साथी शिवपाल को डाक्टर क्लॉज बार्टोनेट्ज ट्रेनिंग दे रहे थे पर वह पिछले माह जर्मनी लौट गए और अब तक नहीं लौटे हैं।

निशानेबाजी में भारत ने पिछले कुछ सालों में अच्छी साख बनाई है और इसी खेल में ही सबसे ज्यादा पदक आने की उम्मीद की जा रही है। हमारे 15 निशानेबाजों ने ओलिंपिक कोटा हासिल किया है। इनमें पिस्टल शूटर सौरभ चौधरी, राही सरनोबत, मनु भाकर और अभिषेक वर्मा में शामिल हैं। पिस्टल शूटिंग में पदक आने की सबसे ज्यादा संभावनाएं हैं। इन शूटरों को पॉवेल समिरनोव प्रशिक्षण दे रहे हैं। वह शिविर लगने और अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों के समय ही भारत आते हैं। लेकिन वह 65 साल के हैं और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की भी समस्या है।

अष्टयोग-5130

	7		5	1	6	
	33	1	25		31	
1		6		3		5
5	39		31	6	34	
	7		3			1
2	36	7	36	7	30	2
	1	3		4		

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5129 का हल

7	3	2	4	1	6	5
3	30	1	24	2	30	6
6	5	3	4	7	1	2
5	35	6	37	3	29	1
4	1	5	3	6	2	7
2	31	7	40	4	33	4
1	7	4	6	5	2	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

भारत इस बार पदक का दावेदार

मोहन। भारतीयों के लिए ओलिंपिक में हॉकी पदक के बहुत मायने हैं। लंबे समय बाद भारत को इस बार पदक का दावेदार माना जा रहा है। इसकी वजह पिछले एक दो सालों में टीम का शानदार प्रदर्शन करके विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच जाना है। अभी तो हम ओलिंपिक तैयारी के लिए शिविर लगाने की कवायद में ही जुटे हैं। शिविर शुरू हो जाने के बाद खिलाड़ियों के प्रदर्शन को ओलिंपिक तक पीक पर पहुंचाने की योजनाएं बनाई जाएंगी। आमतौर पर इन योजनाओं को अमली जामा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करके पहनाया जाता है लेकिन दुनिया की मौजूदा स्थिति के मद्देनजर हाल–फिलहाल अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली स्थिति बनती नहीं दिख रही है। कारण यह कि ओलिंपिक तैयारियों के लिहाज से भारतीय खिलाड़ियों के लिए आने वाला हर दिन बेहद अहम है।